

वश्व की सबसे बड़ी 'डायनासोर हैचरी' में से एक का खुलासा चर्चा में क्यों?

हाल ही में पुरातत्त्ववर्दों द्वारा की गई खोज के अनुसार, मध्य प्रदेश वश्व की सबसे बड़ी डायनासोर हैचरी में से एक है।



मुख्य बढि:

- राज्य के कई ज़िलों में वसित नरमदा घाटी में सैकड़ों डायनासोर के अंडे और घोंसले के जीवाश्म मिले हैं, जो कसबसे बड़े ज्ञात डायनासोरों में से एक शाकाहारी टाइटेनोसॉर से संबंधित हैं।
- सबसे हालिया खोज धार ज़िले के लमेटा में की गई थी, जहाँ वभिन्न संस्थानों के पुरातत्त्ववर्दों की एक टीम ने नकित स्थिति 92 डायनासोर घोंसले और शाकाहारी टाइटेनोसॉर के 256 जीवाश्म अंडे की खोज की, जनिमें से प्रत्येक क्लच में एक से बीस अंडे थे, जो लगभग 66 मिलियन वर्ष पहले के थे।
 - इन डायनासोरों के अंडों का व्यास 15 सेमी. से 17 सेमी. के बीच था, प्रत्येक घोंसले में एक से 20 तक अंडे थे। कुछ अंडों में से बच्चे निकलने के प्रमाण मिले, जबकि अन्य में नहीं।
- लमेटा शैल समूह मास्टरचियिन युग (उत्तर क्रेटेशियस) की है और गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश में भी पाई जाती है।
 - यह डायनासोर प्रजातियों की वविधता के लिये उल्लेखनीय है, जसिमें टाइटेनोसॉर सॉरोपॉड आइससॉरस व एबेलसॉरस इंडोसॉरस, इंडोसुचस, लेवसुचस और राजासॉरस शामिल हैं।
 - लमेटा शैल समूह में सतनधारियों, सांपों और अन्य जानवरों के जीवाश्म भी शामिल हैं।
 - यह प्रागैतहासिक शैल समूह क्रेटेशियस काल के अंत में उनके वल्लिपुत होने से पहले, भारत में डायनासोर के विकास के अंतिम चरण का प्रतनिधित्व करती है।
- भारतीय वज्जान शकिषा और अनुसंधान संस्थान, दलिली के नेतृत्व में टीम ने वैज्जानिक पत्रिका PLOS ONE में अपने नषिकर्ष प्रकाशति कयि।
 - उन्होंने नषिकर्ष नकाला का नरमदा घाटी एक डायनासोर हैचरी कषेत्र था, जहाँ टाइटेनोसॉर वशिष रूप से अंडे देने के लयि आते थे।
 - उन्होंने यह भी सुझाव दयि कइस कषेत्र कीजलवायु गर्म और आरद्र है, जसिमें प्रचुर वनस्पततिथा जल स्रोत हैं, जो डायनासोर के अस्तित्व के लयि उपयुक्त हैं।
 - पछिले अध्ययनों में जबलपुर ज़िले और गुजरात के बालासनोर शहर में भी इसी तरह के नषिकर्ष सामने आए।
- धार ज़िले में पाए गए कुछ जीवाश्म अंडों को स्थानीय ग्रामीणों, जो पीढियों से उन्हें पवतिर पत्थर के रूप में पूजते आ रहे थे, को मान्यता नहीं दी।
 - हथेली के आकार की ये वस्तुएँ, जनिहें 'काकर भैरव' या भूमि के स्वामी के रूप में जाना जाता है, खेतों और पशुधन के सुरक्षात्मक देवता माने जाते थे।

- मध्य प्रदेश में डायनासोर के जीवाशमों और अंडों की खोज ने न केवल क्षेत्र के पुरापाषाण इतिहास के वैज्ञानिक ज्ञान को समृद्ध किया है, बल्कि पर्यटन तथा शिक्षा के लिये नए रास्ते भी खोले हैं।
- राज्य सरकार की इन स्थलों को पर्यटक आकर्षण के रूप में विकसित करने और राज्य की समृद्ध डायनासोर वरिसत के वषिय में जनता के बीच जागरूकता उत्पन्न करने की योजना है।



लमेटा शैल समूह

- लमेटा शैल समूह को 'इन्फ्राट्रैपियन बेड' के रूप में भी जाना जाता है, एक भू-वैज्ञानिक संरचना है, जो दक्कन ट्रैप से जुड़े मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में पाई जाती है।
 - 'इन्टरट्रैपियन बेड' भारत में एक उत्तर करेटेशियस और पूर्व पेलियोसीन भू-गर्भिक संरचना है। यह दक्कन ट्रैप परतों के बीच इंटरबेड के रूप में पाए जाते हैं, जसमें अधिक विविध लमेटा शैल समूह भी शामिल है।

मास्टरचियिन युग (उत्तर करेटेशियस)

- मास्टरचियिन ICS भूगर्भिक समय पैमाने में है, जो उत्तर करेटेशियस युग या ऊपरी करेटेशियस शृंखला, करेटेशियस अवधि या प्रणाली और मेसोजोइक युग या एराथेम का नवीनतम युग (ऊपरी चरण) है। इसका अंतराल 72.1 से 66 मिलियन वर्ष पूर्व तक फैला हुआ था।